International Journal of Emerging Voices in Education
Volume 2 | Issue 4 | April 2026 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i4.48

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययनरत आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. सुमन कुमारी कुशवाह

सहायक आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग, शशि भूषण बालिका विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

Email: simmymks44@gmail.com

Received: 07 April 2026 | **Accepted:** 19 April 2026 | **Published:** 29 April 2026

Abstract (सार)

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। इसके लिए वर्णनात्मक शोध सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के लिए लखनऊ जनपद के यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा-11 के 260 विद्यार्थियों (140 छात्र तथा 120 छात्रा) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन द्वारा किया गया। चरो के मापन हेतु तारा सबापधी द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी, डिंपल रानी एवं एम0एल0 जैदका द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी कक्षा-10 की बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त होने वाले प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु पियरसन सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए हैं- (1) विद्यार्थियों, छात्रों, छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह-सम्बन्ध है। (2) विद्यार्थियों, छात्रों, छात्राओं की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह-सम्बन्ध है।

मुख्य शब्द- *संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार है और विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, संस्कार, समझ और सही दिशा प्रदान करती है जबकि विद्यार्थी उस ज्ञान को सीखकर अपने जीवन और समाज को बेहतर बनाता है। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि शैक्षिक संस्थान शिक्षा प्रदान करने के अभिकरण हैं। कक्षा–12 तक की शिक्षा विद्यालय में प्रदान की जाती है। कक्षा–11 व 12 की शिक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहते हैं। विद्यालय में एक निश्चित अवधि के दौरान प्रदान किये जाने वाले अधिगम अनुभव का मूल्यांकन उपलब्धि परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है। किसी निश्चित अवधि में विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में प्राप्त किये जाने वाला ज्ञान उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अनेक कारकों से प्रभावित होती है, इनमें से कुछ मुख्य कारक हैं विद्यार्थियों की बुद्धि सामाजिक–आर्थिक स्तर, संवेगात्मक परिपक्वता, गृह वातावरण, अध्ययन आदत, लेखन शैली, पारिवारिक पृष्ठभूमि, अभिप्रेरणा स्तर, मानसिक स्वास्थ्य, आकांक्षा स्तर आदि है।

संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले दो मुख्य कारक हैं। संवेगात्मक परिपक्वता से तात्पर्य अपनी भावनाओं (संवेगों) को समझना, नियंत्रित करना और सही तरीके से व्यक्त करना।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJEVE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

अध्ययन आदत से तात्पर्य उन नियमित तरीकों और व्यवहारों से है, जिनके द्वारा विद्यार्थी पढ़ाई करता है। यह पढने, लिखने, याद करने और समय का सही उपयोग करने की अच्छी आदतों का समूह है।

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

इस विषय के संदर्भ में सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की गयी जिसका विवरण प्रस्तुत है–

Vhatkar (2019) ने विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान और भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना। अतः यह पाया गया कि विद्यार्थियों के आत्म सम्मान और भावनात्मक परिपक्वता में धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

Thimmaraju (2022) ने माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें और शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया और अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उनकी शैक्षिक उपलब्धि से अधिक और धनात्मतक रूप से सह–सम्बन्धित है।

Mandal (2023) ने विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें और शैक्षिक उपलब्धि का एक समीक्षात्मक अध्ययन किया। समीक्षा के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि अच्छी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

Jain and Kumar (2024) ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक तथा धनात्मक रूप से सह–सम्बन्धित है।

Masud and Rahaman (2025) ने उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें और शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्धात्मक अध्ययन किया और अपने शोध में यह पाया कि अध्ययन आदतें और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन''।

अध्ययन में प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएँ

1. **संवेगात्मक परिवक्वता–** संवेगात्मक परिपक्वता से तात्पर्य तारा सबापधी द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर प्राप्त होने वाले प्राप्तांकों से है।
2. **अध्ययन आदत–** अध्ययन आदत से तात्पर्य डिम्पल रानी एवं एम0एल0 जैदका द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी पर प्राप्त होने वाले प्राप्तांकों से है।
3. **शैक्षिक उपलब्धि–** शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य कक्षा–10 बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त होने वाले प्राप्तांको से है।
4. **माध्यमिक स्तर–** माध्यमिकि स्तर से तात्पर्य कक्षा–11 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन निम्नलिखित समूहों के संदर्भ में करना–

   1.1 समस्त प्रतिदर्श (विद्यार्थी)
   1.2 छात्र
   1.3 छात्रा

2. अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन निम्नलिखित समूहों के संदर्भ में करना–
   2.1 समस्त प्रतिदर्श (विद्यार्थी)
   2.2 छात्र
   2.3 छात्रा

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

$H_0$1.1 विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$1.2 छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$1.3 छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।

$H_0$2.1 विद्यार्थियों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$2.2 छात्रों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$2.3 छात्राओं की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ जनपद तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ जनपद के केवल यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल कक्षा–11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक शोध तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में लखनऊ जनपद के यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध समस्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–11 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन विधि

सर्वप्रथम लखनऊ जनपद का चयन सुविधाजनक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। लखनऊ जनपद के यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध विभिन्न माध्यमिक विद्यार्थियों से 10 विद्यालयों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। इन चयनित महाविद्यालयों से 260 विद्यार्थियों (140 छात्र तथा 120 छात्रा) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया।

अध्ययन के चर

1. संवेगात्मक परिपक्वता
2. अध्ययन आदत
3. शैक्षिक उपलब्धि
4. जनसांख्यिकीय चर–लिंग

इन चरों में संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत स्वतंत्र चर/ पूर्वकथक चर हैं तथा शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर/कसौटी चर हैं।

अध्ययन में उपयुक्त उपकरण

1. **संवेगात्मक परिपक्वता–** संवेगात्मक परिपक्वता स्तर के नाम हेतु तारा सबापधी द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है। इसमें 6 आयाम तथा 44 एकांश हैं।
2. **अध्ययन आदत–** अध्ययन आदत मापन हेतु डिम्पल रानी एवं एम0एल0 जैदका द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में 7 आयाम और 48 एकांश हैं।
3. **शैक्षिक उपलब्धि–** शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु कक्षा–11 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की कक्षा 10 की बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त होने वाले प्राप्तांकों को किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु पियर्सन सह–सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण, परिणाम तथा विवेचना

उपकरणों का प्रशासन करके विद्यार्थियों से आंकड़ों का संकलन किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण करके परिणाम प्राप्त किये गये तथा उनकी विवेचना की गयी।

शून्य परिकल्पना $H_01.1$, $H_01.2$ तथा $H_01.3$ का परीक्षण

इन परिकल्पनाओं का परीक्षण पियर्सन सह–सम्बन्ध की सहायता से किया गया तथा प्राप्त परिणाम को तालिका–1 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका–1

विद्यार्थियों, छात्रों, छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध : पियर्सन सह–सम्बन्ध गुणांक

समूह	संख्या (N)	चर	पियर्सन सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	स्वतत्रांश (df)	परिणाम
विद्यार्थी	260	• संवेगात्मक परिपक्वता • शैक्षिक उपलब्धि	.62	258	.01 स्तर पर सार्थक
छात्र	140	• संवेगात्मक परिपक्वता • शैक्षिक उपलब्धि	.58	138	.01 स्तर पर सार्थक
छात्रा	120	• संवेगात्मक परिपक्वता • शैक्षिक उपलब्धि	.66	118	.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या :

तालिका–1 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों, छात्रों तथा छात्राओं के लिए प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक क्रमशः .62, .58 तथा .66 है। प्राप्त तीनों सह–सम्बन्ध गुणांक .01 स्तर पर सार्थक तथा धनात्मक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_01.1$, $H_01.2$ तथा $H_01.3$ .01 स्तर पर अस्वीकृत होती है। तीनों शून्य परिकल्पनाओं के अस्वीकृत होने पर निम्न परिणाम प्राप्त होता है–

परिणाम 1.1 विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 1.2 छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 1.3 छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 1.1, 1.2 एवं 1.3 की विवेचना

संवेगात्मक परिपक्वता स्तर के विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा स्तर, आत्मविश्वास, आकांक्षा स्तर, पढ़ाई के प्रति लगन एवं रूचि, पढ़ाई के प्रति एकाग्रता आदि के स्तर को बढ़ा देती है। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः इस प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक तथा सार्थक सम्बन्ध है।

शून्य परिकल्पना $H_0 2.1$, $H_0 2.2$ तथा $H_0 2.3$ का परीक्षण

इन परिकल्पनाओं का परीक्षण पियर्सन सह–सम्बन्ध की सहायता से किया गया तथा प्राप्त परिणाम को तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका–2

विद्यार्थियों, छात्रों, छात्राओं की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध : पियर्सन सह–सम्बन्ध गुणांक

समूह	संख्या (N)	चर	पियर्सन सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	स्वतत्रांश (df)	परिणाम
विद्यार्थी	260	• अध्ययनरत आदत • शैक्षिक उपलब्धि	.56	258	.01 स्तर पर सार्थक
छात्र	140	• अध्ययनरत आदत • शैक्षिक उपलब्धि	.54	138	.01 स्तर पर सार्थक
छात्रा	120	• अध्ययनरत आदत • शैक्षिक उपलब्धि	.59	118	.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्याः

तालिका–2 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों, छात्रों तथा छात्राओं के लिए प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक क्रमशः .56, .54 तथा .59 है। प्राप्त तीनों सह–सम्बन्ध गुणांक .01 स्तर पर सार्थक तथा धनात्मक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0 2.1$, $H_0 2.2$ तथा $H_0 2.3$ .01 स्तर पर अस्वीकृत होती है। तीनों शून्य परिकल्पनाओं के अस्वीकृत होने पर निम्न परिणाम प्राप्त होता है–

परिणाम 2.1 विद्यार्थियों की अध्ययन आदत तथा शैक्ष्जिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 1.2 छात्रों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 1.3 छात्राओं की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक तथा धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम 2.1, 2.2 एवं 2.3 की विवेचना

अध्ययन आदतें और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की समझ, स्मरण शक्ति और रूचि को बढ़ाने में सहायक होती है। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ जाती है। अध्ययन आदतें आत्मविश्वास में वृद्धि करती है, विद्यार्थी को एकाग्र बनाती है और समय प्रबन्धन करती है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा की दृष्टि से अध्ययन आदतें शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष

प्रस्तत अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–

- विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। संवेगात्मक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे से सम्बन्धित है अर्थात् जैसे–जैसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है।
- विद्यार्थी की अध्ययन आदत उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध है अर्थात् जैसे–जैसे अध्ययन आदत बढ़ती है, वैसे–वैसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययन आदत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। अतः विद्यार्थियों की संवेगात्मतक परिपक्वता स्तर तथा अध्ययन आदत में सुधार करके उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जा सकता है। संवेगात्मक परिपक्वता स्तर बढ़ाने के लिए परिवार के सदस्यों, विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों को प्रयास करना चाहिए। अच्छी अध्ययन आदतें धीरे–धीरे अभ्यास और अनुशासन से विकसित होती है। सही योजना, नियमित अभ्यास और सकारात्मक दृष्टिकोण से कोई भी विद्यार्थी अपनी अध्ययन आदतों को सुधार सकता है और शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ सूची

[1]. **Kayal, M.A. and Rahaman, K.H. (2025).** Study Habits and Academic Achievement : A Correlational study Among Higher Secondary Students. International Educational Scientific Research Journal. Vol. 11(6).

[2]. **Kumar, M., & Mishra, R. (2016).** Emotional Maturity and Academic Achievement among Adolescent students : A Review of studies. The International Journal of Indian Psychology, 3(4).

[3]. **Mandal, B. (2023).** A Study of Study Habit and Academic Achievement of Students : A Systematic Review Futuristic Trends in Social Sciences. Vol. 2(1), pp. 109-124.

[4]. **Rani, D. & Jaidk, M.L.** Study Habit Scale. Agra, U.P. National Psychological Corporation.

[5]. **Sabapathy, Tara.** Emotional Maturity Scale. Agra, U.P. National Psychological Corporation.

[6]. **Thimmaraju T. (2022).** Influence of study habits on Academic Achievement of Secondary School Students. International Journal of Creative Research Thoughts. Vol. 10(3).

[7]. **Vhatkar, K.A. (2019).** A Study of Self-Esteem and Emotional Maturity Among Students. The International Journal of Indian Psychology. Vol. 7(1).

Cite this Article:

***सुमन कुमारी कुशवाह** (2026). **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा अध्ययनरत आदत का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन**. International Journal of Emerging Voices in Education, 2(4), 15–20.*

Journal URL: *https://ijeve.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i4.48*